दादा भगवान परिवार का

जनवरी २०२५

आक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

फ्रेन्ड्स, आपने मंदिरों में 'दान पेटी' शब्द पढ़ा होगा। कभी बड़ों ने दान पेटी में डालने के लिए आपको पैसे भी दिए होंगे। लेकिन वास्तव में 'दान' अर्थात् क्या? दान के कितने प्रकार हैं? क्या दान देने के लिए हमारे पास पैसे होना ज़रूरी है? इस अंक में हम इन प्रश्नों के उत्तर जानेंगे। साथ ही, त्विशा, अंबिक और शौर्य को ट्रेज़र हन्ट के खेल में क्लूज़ सॉल्व करने में मदद भी करेंगे।

तो चलो, देखते हैं कि ट्रेज़र हन्ट की जर्नी में हमारे मित्रों को कौनसा खज़ाना मिलता है और उस खज़ाने का दान के साथ क्या कनेक्शन है।

-डिम्पल मेहता

Editor: Dimple Mehta

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by and Published from
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School,
Chhatral-Pratappura Road,
At-Chhatral, Tal. Kalol
Dist. Gandhinagar – 382729.

© 2025, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

वर्ष : १२ अंक: १०
अखंड क्रमांक: १४२
जनवरी-२५

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सीटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

अक्रम
एक्सप्रेस

दादाजी कहते हैं...

दान यानी दूसरे किसी भी जीव को, मनुष्य हो या दूसरे प्राणी हों, उन्हें सुख देना। और सबको सुख दिया इसलिए उसका 'रिऐक्शन' हमें सुख ही मिलता है। सुख दोगे तो तुरंत ही सुख आपको घर बैठे मिलेगा!

खुद के घर के रुपये देते हो फिर भी सुख लगता है, क्योंकि अच्छा काम किया। अच्छा काम करता है तो सुख लगता है और खराब काम करते समय दुःख होता है।

चार प्रकार के दान हैं। पहला, आहारदान। दूसरा, औषधदान। तीसरा, ज्ञानदान और चौथा, अभयदान।

आहारदान

इस दान के लिए तो ऐसा कहा है कि भाई, अगर कोई इंसान आपके घर आया हो और कहे, 'मुझे कुछ दीजिए, मैं भूखा हूँ।' तब कहो, 'बैठ जा यहाँ खाने', वह आहारदान। इन भाई साहब ने खाना खिलाया तो वह आज के दिन तो जिएगा। कल फिर जीने के लिए उसे कोई आ मिलेगा। फिर कल का विचार आपको नहीं करना चाहिए। आपके घर आया इसलिए आप उसे दो, जो कुछ दे सको वह।

औषधदान

कोई गरीब इंसान हो, वह बीमार पड़ा हो और अस्पताल में गया हो और वहाँ कहे कि 'अरे, डॉक्टर ने कहा है, पर दवाई लाने के लिए पचास रुपये मेरे पास नहीं हैं। इसलिए दवाई कैसे लाऊँ?' तब आप कहो कि 'ये पचास रुपये दवाई के और दस रुपये दूसरे।' या तो कहीं से औषध लाकर आप उसे मुफ्त में दो। पैसा खर्च करके औषध लाकर उसे फ्री ऑफ कॉस्ट (मुफ्त) देते हो। तो वह बेचारा चार-छह साल जिएगा। औषधदान को अन्नदान से ज्यादा कीमती माना गया है। क्योंकि वह दो महीने भी जीवित रखता है। मनुष्य को थोड़ा अधिक समय जीवित रखता है। वेदना में से थोड़ी-बहुत मुक्ति दिलाता है।

श्रेष्ठ ज्ञानदान

ज्ञानदान में, पुस्तकें छपवाना, लोगों को समझाकर सच्चे रास्ते पर मोड़ना और लोगों का कल्याण हो ऐसी पुस्तकें छपवाना आदि वह ज्ञानदान। अब वह ज्ञान कैसा होना चाहिए? लोगों को हितकारी हो ऐसा ज्ञान होना चाहिए।

उदाहरण के तौर पर : दादाश्री की 'टकराव टालिए' पुस्तक पढ़कर कई लोगों के झगड़े मिट जाते हैं और उनके जीवन में शांति हो जाती है।

यह दुनिया का श्रेष्ठ ज्ञानदान! ज्ञानदान दे तो अच्छी गतियों में, ऊँची गतियों में जाता है या फिर मोक्ष में भी जाता है।

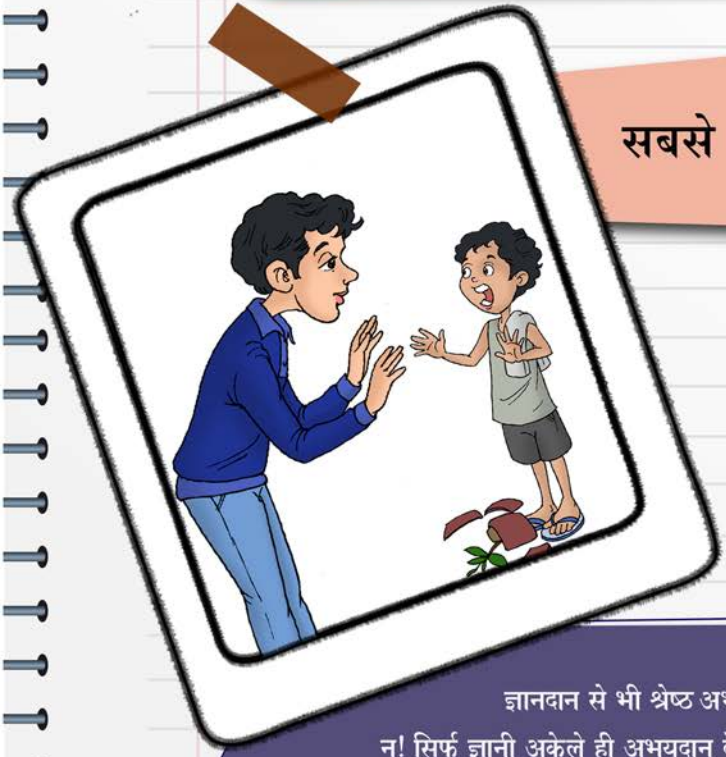

सबसे श्रेष्ठ अभयदान

अभयदान तो किसी भी जीवमात्र को कष्ट न हो ऐसा वर्तन रखना, वह अभयदान। इसलिए किसी भी जीव को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो, ऐसे भाव पहले रखना। उसमें पैसों की कोई ज़रूरत नहीं है। सबसे श्रेष्ठ दान ही यही है।

ज्ञानदान से भी श्रेष्ठ अभयदान! मगर लोग अभयदान दे नहीं सकते न! सिर्फ ज्ञानी अकेले ही अभयदान देते हैं। ज्ञानी और ज्ञानी का परिवार होता है, वे अभयदान देते हैं। ज्ञानी के फॉलोअर्स (अनुयायी) होते हैं, वे अभयदान देते हैं। किसी को भय नहीं लगे इस प्रकार रहते हैं। सामने वाला भय रहित रहे, इस प्रकार बरतते हैं।

कुत्ता भी डरे नहीं इस प्रकार उनका वर्तन होता है। किसी को दुःख दिया तो वह खुद के भीतर पहुँच जाता है। इसलिए हमसे किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी भय नहीं लगे ऐसे रहना चाहिए।

ट्रेज़र हन्ट

'यस!! हमने कर दिखाया! अब खज़ाना हमारा है।' अंबिक ट्रेज़र हन्ट के (खज़ाने की खोज के) अंतिम पडाव पर था।

'अंबिक, यह असली ट्रेज़र हन्ट कहाँ है, जो तुम इतना खुश हो रहे हो!' पीछे दौड़ती हुई त्विशा ने हाँफते हुए पूछा। दोनों मार्क की हुई जगह पर आकर रुक गए।

'चलो अच्छा है... गेम खत्म हो गया...' शौर्य ने अपने दोनों फ्रेन्ड्स के पास जाकर कहा और उबासी लेने लगा। सभी ने मार्क की हुई जगह पर खोदना शुरू किया। अंदर से गिफ्ट पैक किए हुए तीन बॉक्स निकले।

'विजेता बच्चों के लिए गिफ्ट! शाबाश!' त्विशा ने उकताहट के साथ कहा।

शौर्य ने आँखें दिखाते हुए कहा, 'त्विशा, कम से कम खुश होने का नाटक तो करो!' शौर्य, अंबिक और त्विशा कैम्प में इतने बोर हो गए थे कि पूछो मत।

'अरे, मिट्टी में कुछ और भी दबा हुआ है।' अंबिक की नज़र गड्ढे में गई। त्विशा और शौर्य थोड़े सिरियस हो गए।

'शायद सर ने अंदर सर्टिफिकेट्स भी रखे होंगे।' अंबिक ने हँसते हुए कहा।

शौर्य ने पेपर बाहर निकाला और उसे ध्यान से देखते हुए बोला, 'यह कोई क्लू लगता है।'

गेम खत्म होने के बाद फिर से कोई क्लू! तीनों को आश्चर्य हुआ।

'कल रात कैम्प में सर ने कहानी सुनाई थी न', अंबिक कुछ याद करते हुए कह रहा था, 'समुद्री डाकुओं वाली! डाकुओं ने समुद्र में से मिला हुआ खज़ाना यहाँ छुपाया होगा तो?'

‘हाँ, और ये क्लू उनके साथी ही समझ पाएँ ऐसे होंगे!’ त्विशा एकदम उत्साहित हो गई। मानो उसे असली खज़ाना ही मिल गया हो!

‘स्याही (इंक) भी हरे रंग की है। वर्षों पहले लिखा हुआ होने के कारण फीकी पड़ गई है।’ शौर्य कागज़ को बारीकी से देख रहा था।

‘इस क्लू के आधार पर असली खज़ाना मिल जाए तो?’ अंबिक की आँखों में चमक आ गई।

‘कोशिश करके देखते हैं! वैसे भी, कैम्प में तो हम बोर हो रहे हैं।’ त्विशा ने कहा। अंबिक और शौर्य भी सहमत हो गए।

तभी एक छोटा लड़का उनके पास आया।

‘आप तीनों ट्रेज़र हन्ट के विजेता हो। सर आपको बुला रहे हैं’, उसने खुश होते हुए कहा।

‘ऐ डेढ़ सयाने, चल फुट यहाँ से।’ तीनों एक साथ बोले।

वह निराश होकर सिर झुकाकर वहाँ से चला गया। ऐसा पहली बार नहीं हुआ था कि उसने इस कैम्प के ‘फेमस थ्री’ का ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश की थी। लेकिन उन लोगों को उससे बहुत चिढ़ थी। इसलिए हमेशा उसे दुत्कारते रहते थे।

‘तो कल सुबह जब सभी नाश्ता कर रहे होंगे तब हम धीरे से कैम्प के बाहर निकल जाएँगे!’ त्विशा ने कहा।

जैसा कि तय हुआ था, वे तीनों सुबह होते ही निकल तो पड़े, लेकिन जल्दी ही चलते-चलते थक गए। और थकान उतारने के लिए एक बड़े पत्थर पर बैठ गए। शौर्य ने बैग में से क्लू वाला कागज़ बाहर निकाला।

‘अब पढ़ो।’

क्लू ढूँढ़ो

शौर्य, अंबिक और त्विशा को मिले हुए कागज़ पर दी गई चीज़ों के नाम के पहले अक्षर के आधार पर क्लू ढूँढने में मदद करो।

जवाब:-

13

अ जगर

'अक्षयपात्र!', तीनों एक साथ बोले।

'यह तो एक जगह का नाम है। यह नाम कहीं पढ़ा है।' त्विशा को कुछ धुंधला सा दिखाई दे रहा था।

'यह तो एक रेस्टोरन्ट का नाम है। मैंने रास्ते में यह बोर्ड पढ़ा था!' अंबिक ने कहा।

'तो चलो, चलते हैं!!' शौर्य तुरंत उठ खड़ा हुआ। लोगों से रास्ता पूछते-पूछते वे 'अक्षयपात्र' रेस्टोरेन्ट पहुँच गए।

वहाँ बहुत भीड़ थी। रेस्टोरेन्ट के मालिक एक कोने में बैठकर कुछ पढ़ रहे थे। उनका चेहरा बहुत स्नेहमय था। तीनों उत्साहपूर्वक उनके पास जाकर खड़े हो गए। अंबिक ने धीरे से कहा, 'सर, एक बात पूछनी थी।'

'हाँ, बोलो बेटा। क्या पूछना है?'

'सर, क्या आपको कभी यहाँ कोई खज़ाना मिला है?'

'ओह, वह समुद्री डाकुओं वाली कहानी! तुम लोगों ने उस कहानी को सच मान लिया?!'

तीनों ने एक दूसरे की ओर देखा और निराश हो गए। वे वापस जाने ही वाले थे, तभी सर ने उन्हें रोका, 'अरे, अरे.... कहाँ जा रहे हो? बिना खाना खाए यहाँ से मत जाना।'

सुबह कैम्प से नाश्ता किए बिना निकले थे, इसलिए भूख तो बहुत लगी थी। फिर भी त्विशा ने कहा, 'नहीं सर, हम चलते हैं।'

सर उनकी झिझक को समझ गए। उन्होंने प्यार से कहा, 'पैसों की चिंता मत करना। अक्षयपात्र में किसी को पैसे देने की ज़रूरत नहीं है।'

'क्या? ऐसा क्यों?' तीनों ने एक साथ पूछा।

'तुम लोग बैठो। मैं तुम्हारे लिए नाश्ता मंगवाता हूँ। फिर आराम से एक कहानी सुनाऊँगा।' टेबल पर तीनों के लिए गरमागरम वडा पाव की प्लेट रखी गई और सर ने कहानी सुनाना शुरू किया।

वडा पाव

स्टेशन पर ट्रेन कुछ धीमी हुई। खिड़की की रेलिंग को दोनों हाथों से पकड़कर रेयांश ने स्टेशन का नाम पढ़ने के लिए सिर उठाया।

'तुमसे कहा न, अभी देर है।' कहकर मम्मी ने उसे बिठा दिया।

'आइसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक, आइसक्रीम' एक फेरीवाला ट्रेन में चढ़ा।

'बेटा, आइसक्रीम खाओगे?', पापा ने पूछा।

'नहीं पापा, फिर पेट भर जाएगा।' रेयांश ने दृढ़ता से कहा।

'बेटा, कर्जत आने में अभी एक घंटे की देर है' मम्मी ने कहा।

'भले ही हो! पर मुझे तो कर्जत के वडा पाव खाने ही हैं, पापा। और इस बार मैं किसी के साथ शेयर नहीं करूँगा।' रेयांश ने कहा। पिछली बार उसे अपने कज़िन भाई के साथ वडा पाव शेयर करने पड़े थे और आज तक उसे इस बात का अफसोस था।

कुछ देर बाद मम्मी-पापा ने चाय और परांठे खाए। रेयांश के पेट में गुड़गुड़ हो रहा था, लेकिन उसने परांठों को हाथ भी नहीं लगाया। वडा पाव की जगह वह किसी के साथ शेयर नहीं करना चाहता था।

अंत में कर्जत स्टेशन आया और रेयांश वडा पाव खाने के लिए तैयार हो गया।

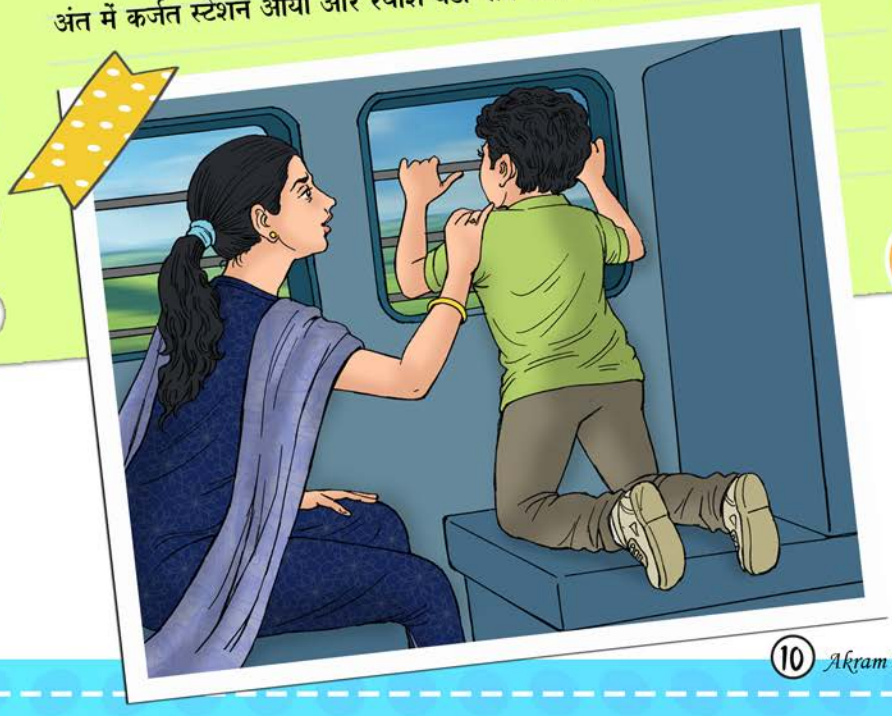

'पापा, दो ले आना।' रेयांश ने खिड़की में से आवाज़ लगाई।

वडा पाव की दुकान के पास एक छोटा गरीब बच्चा अपनी मम्मी की साड़ी का पल्लू खींच कर मम्मी को वडा पाव दिलाने के लिए इशारा कर रहा था। मम्मी ने उसे ज़ोर से 'ना' कहा और उसे गोद में उठा लिया। ट्रेन की खिड़की से रेयांश ने यह दृश्य देखा।

तभी रेयांश के पापा वडा पाव लेकर आ गए। रेयांश ने पैकेट खोला और गरमागरम वडा पाव की खुशबू लेने लगा। उसी समय वे माँ-बेटे उनकी ट्रेन में चढ़े। बच्चे की नज़र रेयांश के वडा पाव पर पड़ी और वह उसे टुकुर-टुकुर देखने लगा।

बच्चे की वह भूखी नज़र देखकर पता नहीं रेयांश को क्या हो गया, कुछ भी सोचे बिना उसने तुरंत ही वडा पाव के पैकेट को मोड़ और उस बच्चे के हाथ में दे दिया।

बच्चे के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। उसकी माँ भी बहुत खुश हो गई। यह देखकर रेयांश को कुछ अलग ही प्रकार की खुशी मिली। पहले कभी उसने ऐसा अनुभव नहीं किया था। किसी भूखे बालक को उसका मनपसंद खाना देने से इतनी खुशी होती है, यह उसे पहली बार जानने को मिला।

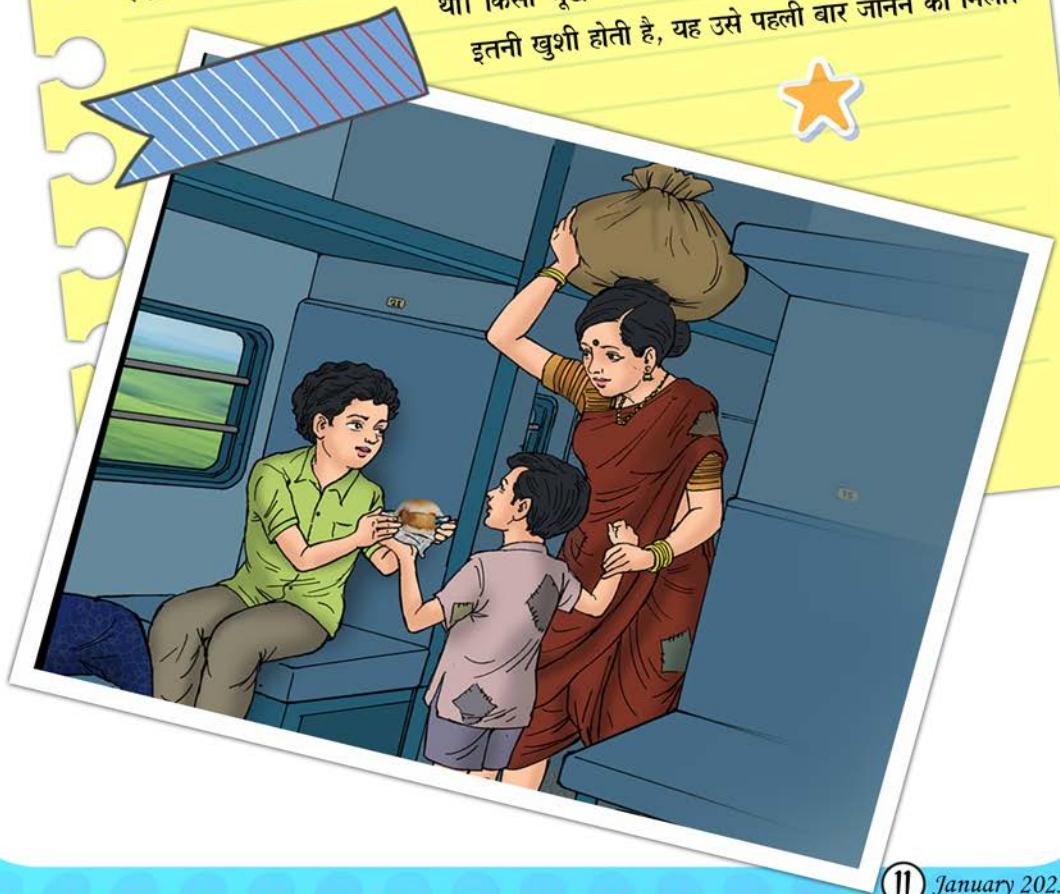

त्विशा, अंबिक और शौर्य ध्यान से सर की बात सुन रहे थे। तभी एक आदमी ने आकर सर से कहा, 'रेयांश भाई, इस पेपर पर साइन कर दीजिए न!' सर ने पेपर पर साइन किया और फिर बच्चों की ओर देखकर थोड़ा मुस्कुराए।

'मतलब आप ही हैं वह...?' तीनों की आँखों में सवाल था।

'हाँ, उस घटना का मेरे मन पर ऐसा असर हुआ कि बड़े होकर मैंने यह रेस्टोरन्ट खोल लिया। यहाँ खाना खाने आने वाला जितने पैसे चुकाना चाहता हो उतने पैसे चुकाने की उसे अनुमति है। किसी से पैसे माँगे नहीं जाते। भूखे लोग पेट भरकर खाते हैं। और आश्चर्य की बात यह है कि यहाँ कभी पैसों की कमी नहीं हुई।'

'वाउ, यह तो वाकई आश्चर्य की बात है।' शोर्य ने कहा।

"हाँ! तुम लोग कौनसा खज़ाना ढूँढ़ने आए हो यह तो पता नहीं, लेकिन मेरे लिए तो 'अक्षयपात्र' ही मेरा खज़ाना है!" सर ने गर्व से कहा।

वडा पाव का स्वाद और कहानी का सार साथ लेकर तीनों बच्चे सर से विदा लेकर बाहर निकले।

'अब कैम्प में वापस लौट जाना या फिर खज़ाने की खोज को आगे बढ़ाना', तीनों इन्हीं सवालों में उलझे हुए थे, तभी उनकी नज़र एक पत्थर पर हरी स्याही से बने हुए डॉट्स पर पड़ी।

'हरी स्याही!', त्विशा ने कहा, 'उस कागज पर भी हरी स्याही थी। यह ज़रूर आगे का क्लू होगा!' शौर्य एक नुकीला पत्थर ले आया और त्विशा ने उन डॉट्स को जोड़ा।

क्लू ढूँढ़ो

नंबर के डोट्स जोड़कर आगे का क्लू समझने में मदद करें।

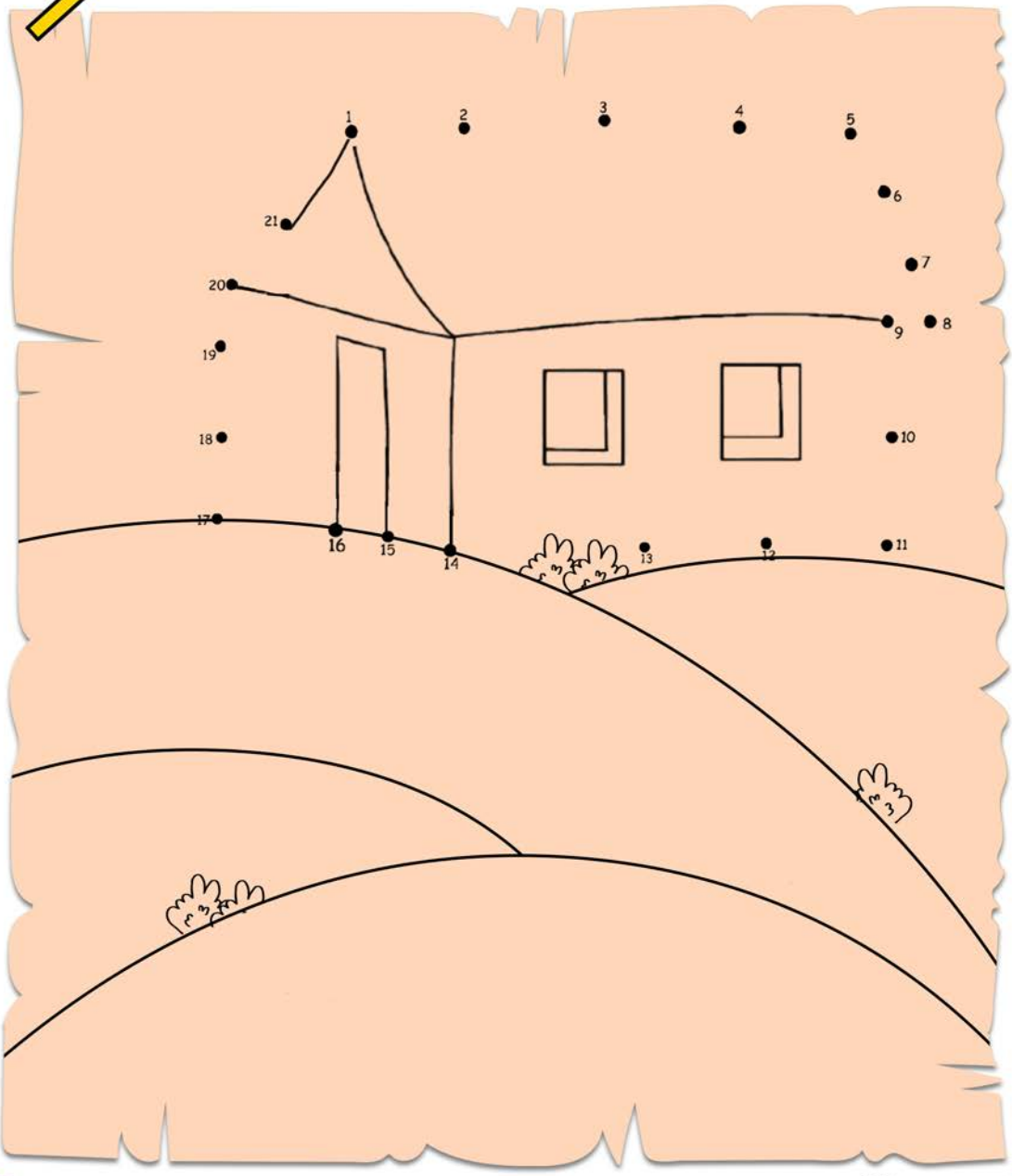

'एक घर!' अंबिक ने जोर से कहा। 'तो अब हमें एक घर खोजना होगा?'

'घर नहीं, एक टीले पर बना घर।' शौर्य ने उसकी बात सुधारते हुए कहा।

सभी ने आस-पास देखा। टीले पर घर कहाँ हो सकता है? किस दिशा में जाना है? तभी शौर्य की नजर दूर टीले पर बने एक घर पर पड़ी।

'चलो!!'

कुछ ही देर में वे टीले के ऊपर पहुँच गए। वहाँ लकड़ी से बने घर के पास गए। दरवाजे पर 'मनोज परीख' नाम की नेम प्लेट लटक रही थी। अंदर कोई दिखाई नहीं दे रहा था। बच्चों ने दरवाजा खटखटाया।

'कौन है?' अंदर से एक स्ट्रोंग आवाज़ आई।

'हम यहाँ क्यों आए हैं इसका असली कारण नहीं बताना है। हम होशियारी से पूरे घर में तलाश करेंगे। किसी को क्लू मिले तो अपने सिर पर तीन बार हाथ घुमाकर एक-दूसरे को इशारा करेंगे', त्विशा ने धीरे से सभी को निर्देश दिया।

दरवाजा खुला।

'सर, हम सफर पर निकले हैं और रास्ता भूल गए हैं। क्या हम कुछ देर यहाँ आराम कर सकते हैं?'

'हाँ, हाँ... क्यों नहीं!' उन सज्जन ने प्यार से बच्चों का स्वागत किया।

अंदर जाकर बच्चे अचंभित हो गए। पूरा घर किताबों से भरा हुआ था।

'बाप रे! इतनी सारी बुक्स!! इन्हें पढ़ने के लिए तो एक पूरी लाइफ कम पड़ जाए!' अंबिक ने आश्चर्य से कहा।

वे सज्जन बच्चों के लिए शरबत लेकर आए।

'सर, यहाँ अकेले आपको डर नहीं लगता?' शौर्य ने उनको बातों में उलझाने की कोशिश की। उस समय त्विशा और अंबिक आस-पास नज़र घुमाकर क्लू ढूँढ़ने लगे।

'जिसके पास बुक्स हों उसे किस बात का डर? और वैसे भी मैं अकेला नहीं हूँ। तुम्हारे जैसे बच्चे अक्सर यहाँ बुक्स पढ़ने और ले जाने के लिए आते हैं।' सज्जन ने जवाब दिया।

'सर, मुझे बुक्स पढ़ना बहुत पसंद है। क्या आपको भी बचपन से बुक्स पढ़ना पसंद था?' शौर्य ने पूछा।

'बचपन में एक ऐसी घटना घटी जिससे मुझमें सत्य को जानने और समझने की इच्छा जागृत हुई', उन सज्जन ने जवाब दिया।

'वह घटना क्या थी?' त्विशा ने पूछा।

नई पाठशाला

उस दिन विहार नगर की रौनक कुछ और ही थी। मानो दिवाली समय से पहले ही न आ गई हो!

एक बिल्डिंग को बहुत ही सुंदर तरीके से सजाया गया था। बिल्डिंग के सामने खुले मैदान में बैठे लोगों की नजरें मंच पर टिकी हुई थीं। मंच पर मशहूर लोग उपस्थित थे। बस, एक कुर्सी खाली थी।

पोडियम पर माइक के सामने खड़े हुए सज्जन कागज़ों को उलट-पलट कर कुछ ढूँढ़ रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो उनका कोई कागज़ गुम हो गया हो।

मैदान में बैठा हुआ एक छोटा बच्चा बिल्डिंग को एकटक देख रहा था। यह बिल्डिंग ही उसका भविष्य रोशन करने वाली थी। तभी सूट-बूट पहने हुए एक सज्जन स्टेज पर आए और लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया। वे जाकर खाली कुर्सी पर बैठ गए।

उस छोटे बच्चे की मम्मी ने उससे कहा,

'मनोज, ये यादव साहब हैं। इन्हीं के कारण विहार नगर के प्रत्येक बच्चे का पढ़ाई का सपना साकार होगा।'

तभी माइक से आवाज़ आई, 'हलो, हलो... देवियों और सज्जनों! विहार नगर के सबसे पहले फ्री प्राथमिक विद्यालय में आपका स्वागत है। जिनकी वजह से यह संभव हुआ है वे इंसान आज हमारे बीच उपस्थित हैं। और वे हैं - मिस्टर यादव।'

यादव साहब हाथ जोड़कर खड़े हुए और फिर वापस विनम्रतापूर्वक अपनी कुर्सी पर बैठ गए। 'सच कहूँ तो यादव साहब का परिचय कराने के लिए मुझे एक कागज़ दिया गया था, जो मुझे मिल नहीं रहा। लेकिन ऐसे महान व्यक्ति, जिन्होंने स्वयं सर्वोत्तम शिक्षा प्राप्त की हो और जिनके हृदय में विद्या का अत्यधिक महत्व हो उनके परिचय के लिए कागज़ की क्या आवश्यकता है!'

'मैं उनसे निवेदन करूँगा कि वे यहाँ आकर दो शब्द कहें।' मिस्टर यादव पोडियम की ओर आए। उनके चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान थी। उन्होंने बड़ी ही नम्रता से हाथ जोड़कर कहा, "सच कहूँ तो शिक्षा का मूल्य उसे तो होगा ही जिसने पढ़ाई की है, लेकिन उसे और अधिक होगा जो पढ़ाई नहीं कर पाया हो। बचपन में मेरे घर के सामने एक फेरीवाला किताबें लेकर बैठा करता था। जब मैं मजदूरी करता था तब मुझे हमेशा लगता था कि 'काश! मैं अनपढ़ न होता। मैं भी ये किताबें पढ़ पाता!' बस, मेरी इसी भावना के कारण आज यह स्कूल बना है। जिसकी लाइब्रेरी बहुत विशाल है। हो सकता है कि इस लाइब्रेरी की किसी एक पुस्तक से किसी बालक को ऐसी समझ मिल जाए कि उसकी जिंदगी बदल जाए। आप सब बहुत मन लगाकर पढ़ाई करना और दिल से किताबें पढ़ना। जो मैं न कर पाया वो आप सब ज़रूर करना।"

तालियों की गड़गड़ाहट हुई और नन्हें मनोज ने उसी समय यादव साहब के हर एक शब्द का दिल से अनुसरण करने का फैसला कर लिया।

अंबिक को मेन डॉर के बाहर लटकी हुई नेम प्लेट याद आई।

'सर, मनोज परीख, मतलब कि...? अंबिक का प्रश्न अधूरा था और सर ने सिर हिलाकर 'हाँ' कहा। "हाँ, वह छोटा सा मनोज 'मैं' ही हूँ।"

तीनों बच्चे बहुत प्रभावित हुए। लेकिन, अब आगे बढ़ने का समय हो गया था।

त्विशा ने कहा, 'सर, थैंक यू वेरी मच। अब हम चलते हैं। लेकिन फिर किसी दिन यहाँ ज़रूर आएँगे।' शौर्य का बुक्स से दूर जाने का मन ही नहीं हो रहा था। लेकिन अंबिक और त्विशा उसे खींचकर बाहर ले गए।

बाहर आकर शौर्य ने कहा, 'चाहे हमें वह खज़ाना मिले या न मिले, लेकिन मुझे तो यह जगह किसी खज़ाने से कम नहीं लगती। मुझे तो मेरा खज़ाना मिल गया!'

'पिछला क्लू हमें यहाँ तक लाया। तो नेक्स्ट क्लू यहीं आस-पास ही होना चाहिए।' अंबिक ने चारों ओर देखते हुए कहा।

"हो सकता है कि हमें गलतफहमी हुई हो और 'टीले पर बना घर' वाला क्लू खज़ाने की तरफ नहीं जाता हो।" त्विशा ने कहा।

तो मित्रों, आपको क्या लगता है? क्या क्लू समझने में त्विशा, अंबिक और शौर्य ने कोई गलती की है? या फिर खज़ाना आस-पास ही कहीं छुपा हुआ है और उन्हें मिल नहीं रहा? उन्हें खज़ाना कैसे मिलेगा? या फिर मिलेगा कि नहीं?!

इन सभी सवालों के जवाब हमें मिलेंगे, अगले अंक में!

AALOO CHILLY

चिली आलू से नाराज़ था। लेकिन आलू उसके लिए 'बेस्ट सिंगर' वाली बॉटल लाया था, जिससे चिली फिर से खुश हो गया था। लेकिन जब आलू ने चिली के प्रतिद्वंदी कोको को भी एक ज्यूस की बॉटल दी तब से चिली को गरम-गरम लगने लगा है। अब आगे...

इससे पहले कि मैं कुछ और सोचता, आलू जोर से चिल्लाया, "चिली, तुम बहुत अच्छा गाते हो!"

और तलाब पर सभी का ध्यान मुझ पर गया। सभी मुझे देख रहे थे। यह देखकर मैं घबरा गया। मैंने सोचा, यह आलू चिल्लाता क्यों होगा? लेकिन फिर तुरंत ही सोचा, मैं क्यों चिंता करूँ! मेरा फ्रेन्ड्शिप सोंग सुनकर सब रो पडेंगे। मुझे तो डर है कि यदि जिफ्फी यहाँ होगा तो उसके आँसुओं से तालाब में बाढ़ आ जाएगी।

इससे पहले कि मैं अपना गाना खत्म कर पाता, कोको ने बीच में गाना शुरू कर दिया।

कैसी है यह कोको? मैंने फ्रेन्ड्शिप पर सोंग गाया, तो उसने मेरी कॉपी कर ली। और मुझे सोंग पूरा भी नहीं करने दिया। यह क्या कम था कि आलू बोल पड़ा।

आलू ने यह क्या कहा? पार्सली के गाने से मुझे सुनाई देना बंद तो नहीं हो गया है न?! मुझे 'बेस्ट सिंगर' कहता है और तारीफ कोको की कर रहा है!! मैंने तुरंत ही जाकर उसके कंधे पर चोंच मारते हुए कहा, "आलू, तुमने मेरे बजाय 'कोको' का नाम लिया।" तो मुझे धीरे से कहता है, "तुमने सुना, उसने क्या गाया?" अरे! मैं क्यों कोको को सुनूगाँ!? कोको को मुझे सुनकर गाना सीखना है, बेस्ट तो मैं ही हूँ। तभी आलू फिर से बोला,

चिली, मुझे लगता है कि इस बार के सिंगिंग कॉम्पिटिशन की विनर तो कोको ही बनेगी!

यह सुनकर मुझे हँसी आ गई। मुझे अब लग रहा है कि आलू मजाक कर रहा है।

'जैसे डान्सिंग कॉम्पिटिशन में तुम पीछे से फर्स्ट आते हो, वैसे ही सिंगिंग में कोको पीछे से फर्स्ट आयेगी?'

और तब मुझे जिफ्फी का जोर से रोना सुनाई दिया। अब इसे क्या हुआ? आलू भी मेरे सामने टुकुर-टुकुर देख रहा था। यह आलू मुझे सपोर्ट करने के बदले कोको को क्यों सपोर्ट कर रहा है!?

ज्ञानमंदिर (गुरुकुल) में प्रवेश आरंभ

इच्छुक माता-पिता जो चाहते हैं कि ज्ञानमंदिर में रहकर परम पूज्य दादा भगवान के ज्ञान से उनके लड़के में संस्कार का सिंचन हो, वे अपने लड़के के इन्टरव्यू के लिए ज्ञानमंदिर, सीमंधर सिटी (अडालज) ऐडमिशन के लिए फोन से रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

रजिस्ट्रेशन सिर्फ कक्षा ५ से ९ तक के गुजराती और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थिओं के लिए किया जाएगा।

अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए फोन नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क समय: सुबह १० बजे से लेकर शाम ७ बजे तक।

मो. ९९२४३४४४८१